वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

अर्थ : हे गणेश देवता। आप विशाल तन तथा सूर्य के समान चमकने वाले हैं। आप से आशा और भीख है कि हमेशा हमारे सभी कार्यों में कोई बाधा न हो।

आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ।।जय०।। एकदन्त दयावन्त चार भुजा धारी। माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ।।जय०।।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ।।जय०।। पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ।।जय०।।
दीनन की लाज रखो, शम्भु सुत वारी। कामना को पूरा करो, जाऊँ बलिहारी ।।जय०।। जो तेरा ध्यान करे ज्ञान मिले उसको। छोड़ बुद्धि और मत ध्याऊँ मैं किसको ।।जय०।।

गजाननं भूत गणादि सेवितं कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्। उमा सुतं शोक विनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ॥

4001

श्री यन्त्रम्

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि । हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे ॥

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता । तुमको निशदिन सेवत हर-विष्णु-धाता ॥ ॐ ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग माता । सूर्य चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॐ ॥
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति-दाता । जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि-धन पाता ॥ ॐ ॥
तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभ दाता । कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता ॥ ॐ ॥
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता । सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ॥ ॐ ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता । खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ ॐ ॥
शुभ-गुण-मन्दिर-सुंदर, क्षीरोदधि-जाता । रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥ ॐ ॥
महालक्ष्मी (जी) की आरती, जो कोई जन गाता । उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ ॐ ॥

4002

कूष्माण्डा
स्कन्दमाता
चन्द्रघण्टा
कात्यायनी
ब्रह्मचारिणी
कालरात्रि
शैलपुत्री
महागौरी
श्री दुर्गा चालीसा

4003

माँ सरस्वती जी की आरती

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता । सद्गुण वैभव शालिनि, त्रिभुवन विख्याता ॥ मैया ...
चन्द्रवदिनी पद्मासिनि, द्युति मंगलकारी । सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेजधारी ॥ मैया ...
बाएँ कर में वीणा, दाएँ कर माला । शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला ॥ मैया ...
देवी शरण जो आए, उनका उद्धार किया । पैठी मंथरा दासी, रावण संहार किया ॥ मैया ...
विद्या ज्ञान प्रदायिनि, ज्ञान प्रकाश भरो । मोह, अज्ञान और तिमिर का, जग से नाश करो ॥ मैया ...
धूप दीप फल मेवा, माँ स्वीकार करो । ज्ञानचक्षु दे माता, भव से उद्धार करो ॥ मैया ...
माँ सरस्वती जी की आरती, जो कोई जन गावे । हितकारी सुखकारी, ज्ञान भक्ति पावे ॥ मैया ...
जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता । सद्गुण वैभव शालिनि, त्रिभुवन विख्याता ॥ मैया ...

4004

श्री महामृत्युंजय मंत्र

ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

ॐ स्वः ॐ भुवः भूः ॐ सः जूं ह्रौं ॐ

[illegible]

आरती श्री शिवजी की

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी हर शिव ओंकारा । ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा ॥ॐ॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजे । हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥ॐ॥
दो भुज चार चतुर्भुज दश भुज ते सोहे । तीनों रूप निरखता त्रिभुवन मन मोहे ॥ॐ॥
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी । चंदन मृग मद चंदा सोहे शुभकारी ॥ॐ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे । ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे ॥ॐ॥
कर मध्ये च कमंडल चक्र त्रिशूल धर्ता । जगकर्ता, जगहर्ता, जगपालन कर्ता ॥ॐ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका । प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका ॥ॐ॥
त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई नर गावे । कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे ॥ॐ॥

4005

आरती श्री कुंज बिहारी जी की

आरती ॐ जय जगदीश हरे

4006

आरती श्री कुंज बिहारी जी की

आरती ॐ जय जगदीश हरे

4007

स्तुति श्री रामचन्द्र जी की

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम्। नव कंजलोचन कंज मुख, कर कंज पद कंजारुणम्॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुन्दरम्। पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरम्॥
भजु दीनबन्धु दिनेश दानव, दैत्यवंश निकन्दनम्। रघुनन्द आनन्दकन्द कौशलचन्द, दशरथ नन्दनम्॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु, उदारु अंग विभूषणम्। आजानुभुज शर चाप धर, संग्राम जित खरदूषणम्॥
इति वदति तुलसीदास शंकर, शेष मुनि मन रंजनम्। मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खलदल गंजनम्॥
मनु जाहि राचेउ मिलहि सो, बर सहज सुन्दर साँवरो। करुणा निधान सुजान शील, सनेह जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि, सिय सहित हिय हरषी अली। तुलसी भवानिहि पूजि पुनिपुनि, मुदित मन मन्दिर चली॥
जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि। मंजुल मंगल मूल वाम अंग फरकन लगे॥

4008

राम रामेति रामेति, रमे रामे मनोरमे। सहस्रनाम तत्तुल्यं, रामनाम वरानने॥

॥ स्तुति श्री रामचन्द्र जी की ॥

4009

श्री हनुमान चालीसा

4010

श्री श्याम बाबा जी की आरती

ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे । खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ॥ ॐ जय...
रत्न जड़ित सिंहासन, सिर पर चँवर ढुरे । तन केसरिया बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ॥ ॐ जय...
गल पुष्पों की माला, सिर पर मुकुट धरे । खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जले ॥ ॐ जय...
मोदक खीर चूरमा, सुवरण थाल भरे । सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ॥ ॐ जय...
झांझ कटोरा और घड़ियावल, शंख मृदंग धुरे । भक्त आरती गावें, जय जयकार करे ॥ ॐ जय...
जो ध्यावे फल पावे, सब दुःख से उबरे । सेवकजन निजमुख से, श्री श्याम श्याम उचरे ॥ ॐ जय...
श्री श्याम बिहारी जी की आरती, जो कोई नर गावे । कहत मनोहर स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥ ॐ जय...
ॐ जय श्री श्याम हरे, ओ बाबा जय श्री श्याम हरे । निज भक्तों के तुमने, पूरण काज करे ॥ ॐ जय...

दोहा : श्याम सलोने सांवरे, बर्बरीक तनु धाम । इच्छा पूर्ण भक्त की, करो न लाओ बार ॥

4011

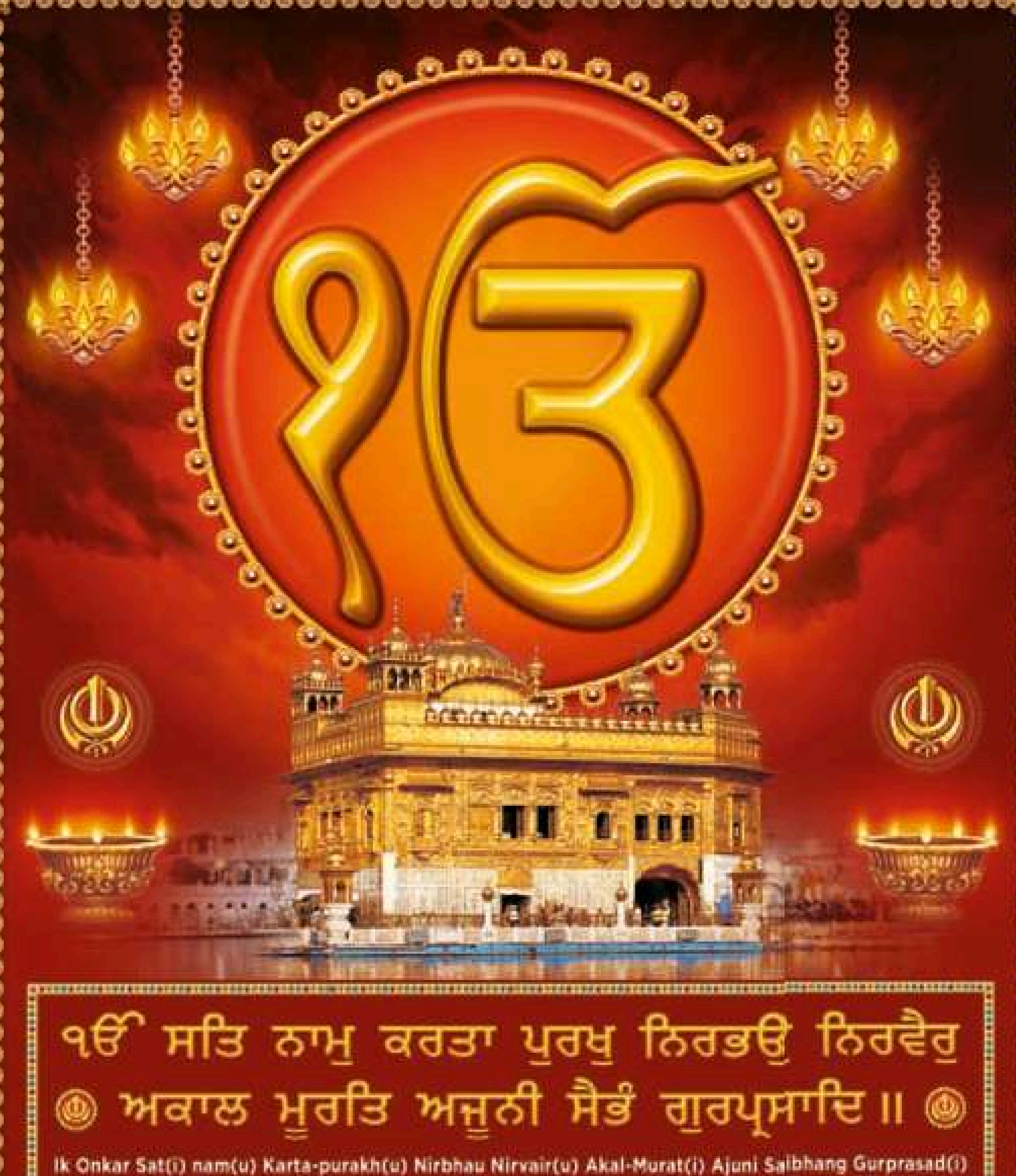

੧ੴ ਸਤਿ ਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖੁ ਨਿਰਭਉ ਨਿਰਵੈਰੁ
ਅਕਾਲ ਮੂਰਤਿ ਅਜੂਨੀ ਸੈਭੰ ਗੁਰਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

Ik Onkar Sat(i) nam(u) Karta-purakh(u) Nirbhau Nirvair(u) Akal-Murat(i) Ajuni Saibhang Gurprasad(i)

੧ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

4012

4013

4014